प्रथमः पाठः

ईशस्तुतिः

[उपनिषदः भगवद्गीता चेति जीवनस्य अभ्युदयाय विकसिताः अमूल्या ग्रन्थाः। उपनिषदः अनेकेषाम् ऋषीणां विचारान् प्रकटयन्ति, भगवद्गीता तु केवलस्य योगेश्वरस्य कृष्णस्य। उभयत्रापि परमात्मनः सर्वशक्तिसंपन्नता दर्शिता। अस्मिन् पाठे तस्यैव परमेश्वरस्य स्तुतिः वर्तते]

यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह।
आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान् न बिभेति कुतश्चन ॥ (तैत्तिरीय 2.9)

असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्मा अमृतं गमय॥ (बृहदारण्यक 1.3.28)

एको देवः सर्वभूतेषु गूढः। सर्वव्यापी सर्वभूतान्तरात्मा ।
कर्माध्यक्षः सर्वभूताधिवासः। साक्षी चेताः केवलो निर्गुणश्च ॥
(श्वेताश्व० 6.11)

त्वमादिदेवः पुरुषः पुराणः
त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम् ।
वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम
त्वया ततं विश्वमनन्तरूप ॥ (गीता 11.38)

नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते
नमोऽस्तु ते सर्वत एव सर्व ।
अनन्तवीर्यामितविक्रमस्त्वं
सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वः ॥ (गीता 11.40)

शब्दार्थाः

अप्राप्य	न लब्ध्वा	न पाकर
विद्वान्	जानन्	जानने वाला
बिभेति	भयं लभते	डरता है
कुतश्चन	कस्मादपि	किसी से भी
मा	माम्	मुझे
गमय	प्राप्य, प्रेषय	भेजो
गूढः	प्रच्छन्नः	छिपा हुआ
सर्वभूतान्तरात्मा	सर्वेषां पदार्थानाम् अभ्यन्तरे वर्तमानः	सभी वस्तुओं के भीतर स्थित
कर्माध्यक्षः	कार्याणां संचालकः	कर्मों पर नियंत्रण रखने वाला
सर्वभूताधिवासः	सर्वेषु पदार्थेषु निवासशीलः	सभी वस्तुओं में रहने वाला
चेताः	जानन्, चैतन्यरूपः	चेतनारूप
परम्	उत्कृष्टम्	सबसे बड़ा
निधानम् (नपुं०)	भाण्डागारम्	भण्डार, स्थान
धाम (नपुं०)	प्रकाशपुञ्जम्	आलोकमय स्थान
ततम् (√तन् + क्त)	प्रसारितम्, व्याप्तम्	फैलाया गया, व्याप्त
अनन्तवीर्य + अमित विक्रमः	अपरिमेयबलयुक्तः, अद्भुतः पराक्रमी	अनन्त शक्तिवाला, अनुपम पराक्रमी
समाप्नोषि (सम् + √आप्)	आत्मसात् करोषि	अपने में विलीन करते हो

व्याकरणम्

अप्राप्य- नञ् + प्र + √आप् + ल्यप्। **विद्वान्**- √विद् + शतृ (वस्-आदेश)। **बिभेति**- √भी + लट्लकार + प्र०पु०, एक०। **कुतश्चन**- कुतः + चन (विसर्गसन्धि)। **ज्योतिर्गमय**- ज्योतिः + गमय (विसर्गस्य र्)। **मृत्योर्मा**- मृत्योः + मा (विसर्गस्य र्)। **सर्वभूतेषु**- सर्वाणि भूतानि तेषु -कर्मधारयसमासः। **सर्वभूतान्तरात्मा**- सर्वभूतानाम् अन्तरात्मा- षष्ठीतत्पुरुषसमास। **कर्माध्यक्षः**- कर्मणाम् अध्यक्षः (संचालकः) षष्ठी त०स०। **सर्वभूताधिवासः**- सर्वभूतानाम् अधिवासः- षष्ठी

त०स०। **गूढः**- √गुह् (गोपन) + क्त। **निर्गुणश्च**- निः + गुणः + च (विसर्गसन्धिः)। **व्यापी**- वि + √आप् + णिनि। **निधानम्**- नि + √धा + ल्युट्। **वेत्तासि**- वेत्ता + असि (दीर्घस्वरसन्धि)। **वेत्ता**- √विद् + तृच्। **वेद्यम्**- √विद् + ण्यत्। **अनन्तरूप**- अनन्तानि रूपाणि यस्य सः- बहुव्रीहि समास, सम्बोधन रूप। **पृष्ठतः**- पृष्ठ + तसिल् (पञ्चमी इति अर्थे:)। **सर्वतः**- सर्व + तसिल्। **नमोऽस्तु**- नमः + अस्तु। **विक्रमस्त्वम्**- विक्रमः + त्वम्। **ततोऽसि**- ततः + असि।

अभ्यासः (मौखिकः)

1. एकपदेन उत्तरं वदत–

(क) ईश्वरात् काः निवर्तन्ते?

(ख) केन सह ताः निवर्तन्ते?

(ग) ब्रह्मणः किं स्वरूपम्?

(घ) कः न बिभेति?

(ङ) तमसः कुत्र गन्तुमिच्छति?

2. एतानि पद्यानि एकपदेन मौखिकरूपेण पूरयत–

(क) यतो वाचो .....।

(ख) आनन्दं ब्रह्मणो .....।

(ग) सर्वभूतेषु .....।

(घ) केवलो .....।

(ङ) त्वमस्य विश्वस्य परं .....।

3. एतेषां पदानाम् अर्थं वदत– विद्वान, गूढः, बिभेति, कुतश्चन, ततम्।

4. स्वस्मृत्या काञ्चित् संस्कृतप्रार्थनां श्रावयत।

अभ्यासः (लिखितः)

1. सन्धिविच्छेदं कुरुत–

(क) कुतश्चन

(ख) ज्योतिर्गमय

(ग) वेत्तासि

(घ) नमोऽस्तु

(ङ) ततोऽसि

2. प्रकृति-प्रत्यय-विच्छेदं कुरुत–

(क) अप्राप्य

(ख) विद्वान्

(ग) गूढः

(घ) ततम्

(ङ) वेद्यम्

3. समासविग्रहं कुरुत–

(क) सर्वभूतेषु

(ख) कर्माध्यक्षः

(ग) अनन्तरूपः

(घ) सर्वभूताधिवासः

(ङ) अमितविक्रमः

4. रिक्तस्थानानि पूरयत–

(क) ..... मा सद्गमय।

(ख) तमसो मा ..... गमय।

(ग) नमः ..... दथ पृष्ठतस्ते।

(घ) वेत्तासि ..... च ..... च धाम।

5. अधोनिर्दिष्टानां पदानां स्ववाक्येषु प्रयोगं कुरुत–

(क) बिभेति

(ख) निवर्तते

(ग) वेत्ता

(घ) सर्वतः

(ङ) नमः

योग्यता-विस्तार

1. उपनिषद् वैदिक साहित्य के ज्ञानकाण्ड को प्रकाशित करती हैं। विभिन्न वैदिक संहिताओं के अन्तर्गत इनका विकास हुआ है। प्रमुख दस उपनिषदों को हम इस प्रकार विभक्त करते हैं। (क) ऋग्वेद से सम्बद्ध- ऐतरेय। (ख) शुक्लयजुर्वेद से सम्बद्ध– ईशावास्य तथा बृहदारण्यक। (ग) कृष्णयजुर्वेद से सम्बद्ध– तैत्तिरीय तथा कठ (घ) सामवेद से सम्बद्ध– केन तथा छान्दोग्य। (ङ) अथर्ववेद से सम्बद्ध– मुण्डक, माण्डूक्य तथा प्रश्न। बृहदारण्यक और छान्दोग्य प्रायः समान आकार की सबसे बड़ी उपनिषद् हैं। माण्डूक्य सबसे छोटी उपनिषद् है जिसमें केवल 12 वाक्य या मन्त्र हैं।

2. उपनिषदों में सामान्यतः ब्रह्म, आत्मा, अद्वैत (एक ही तत्त्व से सब कुछ निकला) सृष्टि, प्राण, कर्मसिद्धांत (कर्म का फल मिलना), वैराग्य, ज्ञान आदि के उपदेश हैं। दार्शनिक दृष्टि से ये विश्व भर में महत्त्वपूर्ण मानी गयी हैं।

3. भगवद्गीता महाभारत के भीष्मपर्व (अध्याय 25-42) में कृष्ण द्वारा अर्जुन को उपदिष्ट ग्रंथ हैं। 18 अध्यायों में विभक्त इसमें 700 श्लोक हैं। निराश व्यक्ति को जीवन में कर्म के प्रति प्रवृत्त करना इसका उद्देश्य है। प्राचीनकाल से ही इसका महत्त्व रहा है। वर्तमान युग में बालगंगाधर तिलक, महात्मा गाँधी तथा विनोबा भावे ने स्वतंत्र व्याख्याएँ लिखकर इसका बहुत प्रचार किया। स्वाधीनता-संग्राम के सैनिकों ने गीता को अपना पाथेय बनाया था।